बपतिस्मा और "मसीह को पहनना"

"क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो" (गलातियों 3:26-29)।

बाइबल में सबसे महत्वपूर्ण सम्बन्धों में से एक सम्बन्ध परमेश्वर की संतान होना बताया गया है। इस जीवन और आने वाले जीवन में मिलने वाले सभी लाभ जो परमेश्वर उपलब्ध करवाता है, इसी सम्बन्ध पर आधारित हैं (रोमियों 8:17; गलतियों 4:7)।

पौलुस चिंतित था क्योंकि कुछ शिक्षक गलतिया के लोगों को उद्धार व यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने की बात पर पुराने नियम की व्यवस्था पर भरोसा रखने के लिए गुमराह करना चाहते थे। उसने बताया कि धार्मिकता व्यवस्था से नहीं बल्कि यीशु में विश्वास करने से आती है (गलातियों 2:16)। व्यवस्था में अनुग्रह नहीं था जिससे हमें धर्मी ठहराया जाता है; यदि हम व्यवस्था से धर्मी ठहर सकते तो यीशु के मरने की आवश्यकता नहीं थी (2:21)।

परमेश्वर ने व्यवस्था देने से पहले, अब्राहम के द्वारा सभी जातियों को आशीष देने की प्रतिज्ञा की थी (गलतियों 3:8; देखें उत्पत्ति 12:3; 22:18)। व्यवस्था ने आशीष नहीं बल्कि इसे मानने वालों को श्राप ही दिया था क्योंकि व्यवस्था को तोड़ने वाला शापित ठहरता था (3:10)। परन्तु इससे मसीह अर्थात अब्राहम के उस वंश के द्वारा आशीष देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा व्यर्थ नहीं हो जाती (3:16, 17)। इस्राएलियों को व्यवस्था यह समझने में सहायता के लिए दी गई थी कि वे इसे तोड़ते थे, और यह तब तक रहनी थी जब तक वह वंश अर्थात मसीह न आ जाता (3:19)।

व्यवस्था के प्रबन्ध में ऐसे मापदण्ड ठहराए जाते हैं जिनसे, व्यवस्था को तोड़ने वाले धर्मी नहीं ठहराए जा सकते। यीशु द्वारा सम्भव बनाया गया अनुग्रह ही पापियों को धर्मी बना सकता है। यदि व्यवस्था से जीवन मिलना सम्भव होता तो धार्मिकता भी व्यवस्था के द्वारा ही मिल सकती थी (3:21)। व्यवस्था का प्रबन्ध, जिससे अनुग्रह से छेड़छाड़ न हो इसके

अधीन रहने वाले लोगों को केवल शाप ही दे सकता था, क्योंकि ऐसे प्रबन्ध के अधीन रहने वाले तभी धर्मी ठहराए जा सकते हैं यदि वे व्यवस्था की एक बात का भी उल्लंघन न करें (3:10)। हम में से कोई भी अपने पाप के कारण व्यवस्था के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया जा सकता (3:21, 22; देखिए रोमियों 3:23)। व्यवस्था को तोड़ने वाले होने के कारण, हमें किसी दूसरे अर्थात यीशु के काम के द्वारा ही धर्मी ठहराया जा सकता है, जिस पर हमारा निर्भर रहना ज़रूरी है (3:22)। कठोर वैधानिक प्रबन्ध के आधार पर हम अपने कर्मों पर निर्भर नहीं रह सकते।

मसीही और गैर मसीही दोनों को ही व्यवस्था के प्रति जवाबदेह होना चाहिए; अन्यथा कोई भी पापी नहीं हो सकता। "जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं" (रोमियों 4:15)। जहां व्यवस्था का उल्लंघन नहीं होगा वहां अनुग्रह की आवश्यकता भी नहीं होगी। मसीही युग में हम मसीह की व्यवस्था के अधीन हैं (1 कुरिन्थियों 9:21; गलातियों 6:2)। हमें उस अनुग्रह से भी जो यीशु के द्वारा पहुंचा आशीष मिली है अर्थात उस अनुग्रह से जो व्यवस्था के द्वारा नहीं मिला था (गलातियों 5:4)। अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने उन लोगों के लिए जो उससे पहले हुए थे (इब्रानियों 9:15) और संसार के सब लोगों के लिए (1 यूहन्ना 2:2) जिनमें हर युग के लोग शामिल हैं, अनुग्रह पहुंचाया।

व्यवस्था का उद्देश्य यीशु की हमारे उद्धारकर्ता होने की आवश्यकता को समझाना था (गलातियों 3:24)। व्यवस्था हमें यह समझने में सहायता करती है कि हम धर्म के अपने कामों से धर्मी नहीं बन सकते अर्थात केवल उसके काम में विश्वास से ही धर्मी बन सकते हैं। अब जबकि यीशु आ चुका है और उसने उस पर विश्वास रखकर धर्मी होना सम्भव बना दिया है इसलिए हम अब "शिक्षक" अर्थात व्यवस्था के अधीन नहीं हैं (3:25)।

व्यवस्था में केवल इस्राएल को ही परमेश्वर की वाचा के लोगों के रूप में पहचान दी गई है। अब सभी लोग चाहे वे यहूदी हों या अन्य जाति, एक समान रूप से मसीह में विश्वास करके बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की संतान बन सकते हैं (3:26, 27)। उनकी जाति चाहे कोई भी हो, सामाजिक स्तर कैसा भी हो, या शारीरिक बनावट कैसी भी हो, हम सभी मसीह में परमेश्वर की संतान हैं (3:28)।

"मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान" (3:26)

पौलुस के अनुसार बपतिस्मा वह क्षण है जब हम मसीह में आते हैं और मसीह में परमेश्वर की संतान बनते हैं। यीशु में आने से हम न केवल परमेश्वर की संतान बल्कि उसके स्वभाव के भी सहभागी बनते हैं। " 'मसीह में' अभिव्यक्ति को पूरे वाक्य को व्यक्त करने वाला मानना चाहिए और इसका अर्थ यह होना चाहिए कि पौलुस ने इस फार्मूले को कहीं और इस्तेमाल किया है अर्थात यह मसीह से निकट संगति और उसकी संगति में मिलना है।"[1]

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने सरल ढंग से इसी विचार को ऐसे लिखा है:

> यदि हम परमेश्वर की संतान कहलाना चाहते हैं, तो हमें ''विश्वास से ... मसीह यीशु में'' होना आवश्यक है (आयत 26), जो कि प्रचलित अनुवाद ''विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है'' से अधिक अर्थपूर्ण है। मसीह में विश्वास के द्वारा और मसीह में होने के द्वारा ही हम परमेश्वर की संतान बनते हैं।[2]

जेज़्स डी. डन्न ने ''मसीह में'' वाज़्यांश के सज़्बन्ध में लिखा:

> इसकी सामर्थ भी यहां संदर्भ से स्पष्ट होती है: ''मसीह में'' आयत 26 की ''मसीह पर'' की स्पष्ट व्याज़्या भी है; ''मसीह में बपतिस्मा'' लेकर ही वे ''मसीह में'' आए थे। ... परन्तु ''मसीह में'' में ''में'' होने से अधिक अर्थ मिलता है जिसकी व्याज़्या उस क्षण में और क्रिया में व्यज़्त की जा सकती है। जिसमें उनके जीवन और भाग्य मसीह से जुड़कर वैसे ही हो गए।[3]

अंग्रेज़ी में विश्वास के लिए प्रयुज़्त गलातियों की पत्री में पौलुस ने पहले उपपद ''the'' को जोड़ा है जिसे वास्तविक अर्थ में लेना चाहिए। इसलिए जैसा कि जॉर्ज डंकन ने ध्यान दिलाया है, शज़्द ''the faith'' (अर्थात विश्वास) इस पत्री के लिखने से भी पहले आ गया था, व्यावहारिक तौर पर यह पुराने धर्म के लिए इस्तेमाल होने वाले ''the law'' की तरह ही नए धर्म को दिया गया नाम है।[4]

गलतियों 3:26 का अनुवाद है, ''ज़्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो'' (3:26)। ''मसीह में विश्वास के द्वारा तुम सब परमेश्वर की संतान हो'' (मेकोर्ड'स न्यू टैस्टामेंट) इन दोनों अनुवादों को मिलाने से मूल आयत मिलेगी: ज़्योंकि मसीह में विश्वास करने से तुम सब परमेश्वर की संतान हो।''

उस विश्वास द्वारा जो यीशु से पहुंचता है, हम उसमें परमेश्वर की संतान बन सकते हैं। बपतिस्मा ही वह क्षण है जब हम परमेश्वर की संतान बनने के लिए मसीह में आते हैं।

''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है'' (3:27क)

मसीही लोग शिक्षक के अधीन नहीं हैं, ''ज़्योंकि'' (यूनानी शज़्द *gar* का अर्थ है ''जिसकी व्याज़्या''[5]) हम विश्वास द्वारा परमेश्वर की संतान हैं। यहां इसका तात्पर्य यह है कि मसीही युग में हम वह संतान नहीं हैं जिन्हें रखवाले (आयत 24, 25 में यू.:*paidagogos*) द्वारा हाथ पकड़कर ले जाया जाए। ''पौलुस के समय में 'pedagogue' यूनानी और रोमी परिवारों में रखे गए दास को कहा जाता था जिसका काम अवयस्क (छह से सोलह वर्ष के) बालक की घर में और बाहर देखभाल करना होता था।''[6]

एफ़.एफ़.ब्रूस ने ''pedagogue'' अर्थात शिक्षक की व्याज़्या इस प्रकार की:

> ... निजी दास – सहायक जो स्वतन्त्र लड़के, दाई की सज़्भाल के बाद से उसके साथ कहीं भी जाने पर रहता था। उसे स्कूल ले जाना, ... वहां उसकी प्रतीक्षा करना, ... फिर उसे घर लाना और जो सबक उसने सीखा होता था उसे ज़बानी बुलवाकर उसकी स्मरणशज़्ति को परखना उसी का दायित्व होता था। *paidagogos* (अर्थात शिक्षक) तब तक लड़के की स्वतन्त्रता पर नियन्त्रण रखता था जब तक वह वयस्क न हो जाए और अपनी स्वतन्त्रता की जिज़्मेदारी का इस्तेमाल करने के लिए उस पर भरोसा न किया जाए।[7]

इसका अर्थ यह है कि शिक्षक एक घरेलू सेवक होता था जिसकी ज़िज़्मेदारियां बालक को स्कूल पहुंचाने के बाद खत्म हो जाती थीं।

इसी प्रकार, व्यवस्था ने हमें यीशु तक लाने के लिए ''pedagogue'' अर्थात एक घरेलू सेवक की तरह काम किया। ज़्योंकि अब यीशु आ चुका है, इसलिए हमें अपने रखवाले अर्थात व्यवस्था के अधीन रहने की आवश्यकता नहीं है। अब हम विश्वास के द्वारा मसीह में परमेश्वर की संतान बनकर (गलतियों 3:26, 27) संतान को मिलने वाली आशिषों और स्वतन्त्रता का लाभ उठा सकते हैं (गलतियों 4:6, 7)।

संतान बनने के बाद हमें विश्वास से मसीह के पारिवारिक स्वरूप में बनना आवश्यक है ''ज़्योंकि'' मसीह में बपतिस्मा लेकर हम यीशु को पहन लेते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम उसके स्वभाव को अपना लेते हैं (गलतियों 3:26, 27)। पौलुस कह रहा था कि बपतिस्मा लेने पर, हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं और जैसे बच्चे अपने माता-पिता के स्वभाव को अपना लेते हैं वैसे ही हम भी परमेश्वर के स्वभाव को अपना लेते हैं। जब हम विश्वास की बात मानते हैं, तो बपतिस्मे से यही परिणाम निकलते हैं।

''उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (3:27ख)

''मसीह को पहन लिया'' अभिव्यज़्ति में ''परमेश्वर की संतान'' होने के कारण परमेश्वर के स्वभाव में होने का विचार मिलता है (गलतियों 3:27)। किसी अधिकारी ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है:

> सांकेतिक अर्थ में इस्तेमाल करने पर ''पहनना'' अभिव्यज़्ति का अर्थ सज़्बन्धित व्यज़्ति के ''चरित्र या नाम को अपनाना'' या ''उस जैसा बनना'' है। मसीह को पहनना मसीह जैसा बनना, परमेश्वर के सामने (परमेश्वर के पुत्र के रूप में) उसका चरित्र अपनाना, उसका नाम पहनना है।[8]

हरमन एन. रिडरबॉस ने टिप्पणी की:

> जैसे पहने जाने वाला कपड़ा (या जिसे पहन लिया है: कुछ लोग अप्रतिरोधी अनुवाद के ज़ी पक्षधर हैं) इसे पहनने वाले व्यज़्ति को ढक लेता है, और उसकी

> और उसके जीवन की पहचान बन जाता है, वैसे ही मसीह में बपतिस्मा लेने वाला पूरी तरह से मसीह और उसके द्वारा लाए गए उद्धार के अन्दर ले लिया जाता है।[9]

जॉर्ज एस. डंकन का कहना था:

> एक विलक्षण ढंग से पहनने वाले की पहचान उसके वस्त्र ही बन जाते हैं। ... इस कारण जब कोई मनुष्य बपतिस्मा लेता है, तो उसकी पहचान अब पूरी तरह से मसीह की होती है अर्थात अब वह जीवित नहीं है बल्कि मसीह उसमें जीवित है। वह मनुष्य पहले कैसा भी क्यों न हो, मसीह में वह एक नई सृष्टि है।[10]

जिस प्रकार पहनावे से हमारे व्यक्तित्व का पता चलता है, वैसे ही मसीह को पहनने से हमारे अंदर मसीह के गुण आ जाते हैं। यह केवल बपतिस्मे के बाहरी संस्कार के कारण ही नहीं, बल्कि उस कार्य में अंदरूनी आत्मिक भागीदारी के कारण होता है जिसमें हमने ''पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है'' (कुलुस्सियों 3:9, 10)।

यीशु के काम तथा वचन पर विश्वास करके जब हम बपतिस्मा लेने के लिए तैयार हो जाते हैं तो परमेश्वर हमें उद्धार और अपनी संतान होने का पुरस्कार देता है। वह हमें प्रतिफल बपतिस्मे के आधार पर नहीं देता बल्कि उस विश्वास के कारण हमारा उद्धार करता है जो हमें उस कार्य के लिए प्रेरित करता है। बपतिस्मा अपने आप में लक्ष्य नहीं है; यह तो यीशु में विश्वास पर आधारित वह कार्य है जिसका परिणाम नया जीवन है। जब हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, तो हमारा स्वभाव परमेश्वर के परिवार में पाए जाने वाले यीशु जैसा होने लगता है।

''क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (3:26, 28, 29)

बपतिस्मा और एक होना

''तुम सब मसीह यीशु में परमेश्वर की संतान हो'' (गलातियों 3:26) अभिव्यक्ति का इस्तेमाल पौलुस ने यह पुष्टि करने के लिए किया था कि गलातिया के सभी लोग एक ही परिवार में से थे। मसीह में भाइयों के रूप में, उनकी पृष्ठभूमि, सामाजिक स्तर या जाति के बावजूद उनमें एक ही आत्मिक परिवार की विशेषताएं थीं। यह कहने के बाद कि जितनों ने बपतिस्मा लिया है वे मसीह में एक हैं, पौलुस ने कहा कि जितने मसीह में हैं वे सब एक हैं (गलतियों 3:27, 28)। बपतिस्मा हमें परमेश्वर की संतान बनाता है और सबको एक करता है। यह हमें बहुत सी धार्मिक देहों में नहीं बल्कि केवल एक ही परिवार अर्थात एक देह (1 कुरिन्थियों 12:13) मसीह की देह (1 कुरिन्थियों 12:27) में लाता है, जो कि उसकी कलीसिया है (कुलुस्सियों 1:18)।

आज बहुत सी अलग-अलग कलीसियाओं में लोगों को लाने के लिए अर्थात उसका सदस्य बनाने के लिए, कई प्रकार के बपतिस्मे दिए जाते हैं। नये नियम का बपतिस्मा एक ही है जो हमें उस एक देह में मिलाता है (इफिसियों 4:4, 5)। वह एक बपतिस्मा सौतेले भाई या बहनें नहीं बनाता बल्कि वह भाई और बहनें, परमेश्वर की संतान बनाता है जिनका स्वभाव आपस में मिलता-जुलता होता है। वे एक ही परिवार में हैं, जो मसीह में एक हैं। बपतिस्मा फूट के बजाय एकता लाने के लिए है।

हम मसीह के हैं

हम में से जो यीशु में बपतिस्मा लेने के कारण उसके हैं वे सभी अब्राहम की आत्मिक संतान और अब्राहम की संतान अर्थात यीशु के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वारिस हैं (3:29)। जैसे हमारे शरीर में जाने वाला भोजन हमारे शरीर का भाग बन जाता है और हमारा होता है, उसी प्रकार जो लोग मसीह में हैं वे आत्मिक रूप से उसका एक भाग हैं और उसके हैं। हमारा यह सज़्बन्ध उसमें बपतिस्मा लेने पर बनता है। यदि हमने बपतिस्मा नहीं लिया है, तो हम यीशु के बाहर हैं अर्थात हमने उसे पहना नहीं है और इस कारण हम उसके नहीं हैं।

सारांश

बपतिस्मा उद्धार के लिए यीशु के बलिदान में विश्वास रखने के रूप में परमेश्वर की एक शर्त है। बपतिस्मा लेने को तैयार होकर हम अपने पापों को धोने और अपने जीवनों को बदलने के लिए यीशु के लहू में भरोसा व्यज़्त करते हैं। इसके अर्थ को समझकर सच्चे मन से बपतिस्मा लेने वाले व्यज़्ति को नया जीवन मिल जाएगा (रोमियों 6:4) जो "अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है" (कुलुस्सियों 3:10)। वह एक नई सृष्टि में बदल जाएगा (2 कुरिन्थियों 5:17), यीशु के स्वभाव को पहना हुआ परमेश्वर का बालक बन जाएगा (गलातियों 3:26, 27)। बपतिस्मा किसी संस्कार को मानने से कहीं अधिक होना चाहिए अर्थात इससे हमें यीशु को पहने हुए परमेश्वर की संतान के रूप में बदलना चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]डेनियल सी. अरिखिया जूनियर और यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन पॉल'स लेटर टू द गलेशियन्स* (न्यूयॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1976), 83. [2]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, द *मैसेज ऑफ़ गलेशियन्स: ओनली वन वे* (डाउनर्स ग्रोव, 3.: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1968),99. [3]जेज़्स डी. जी. डन्न, *ज़्लैक'स न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्रीज़,* अंक 9, *ए कमैन्ट्री ऑन द एपिस्टल टू द ग्लेशियन्स, सामा. सं. हैनरी चेड्रिक* (पीबॉडी, मास.: हैंडरिज़्सन, 1995), 203. [4]जॉर्ज एस. डंकन, द *एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द गलेशियन्स,* द

मौफट न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्री, सं. जेज़्स मौफट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडरवन, हौडर और स्टोग्टन, 1955), 120. [5]गलातियों 3 अध्याय में "for" आयत 25 और 26 तथा आयत 26 और 27 में संयोजक शज़्द है। [6]डेनियल सी. अरिखिया जूनियर और यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन पॉल'स लेटर टू द गलेशियन्स* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1976), 81. [7]एफ़. एफ़. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द गलेशियन्स: ए कमेन्ट्री ऑन द ग्रीक टैज़्सट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं. 1982), 182. [8]अरिखिया एण्ड निडा, 84. [9]हरमन एन. रिडरबॉस, *द एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द चर्चस ऑफ़ गलेशिया,* द न्यू इंटरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं. 1953), 148. [10]जॉर्ज एस. डंकन, *द एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द गलेशियन्स,* द मौफट न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्री, सं. जेज़्स मौफट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडरवन, हौडर और स्टोग्टन, 1955), 123.

विश्वास तथा कार्य करने वाले लोग

यीशु की शिक्षा को "विश्वास" कहा गया है ज़्योंकि यह इससे जुड़े लोगों से विश्वास की अपेक्षा करती है। विश्वास एक ऐसी प्रेरणादायक शज़्ति है जो हमें कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। अपने कर्मों का फल हमें इस विश्वास के कारण मिलता है कि उस विश्वास से हमें कर्म करने की प्रेरणा मिली है। बिना विश्वास के कर्म व्यर्थ है (इब्रानियों 11:6) और बिना कर्म के विश्वास व्यर्थ है (याकूब 2:24)। परमेश्वर को भाने वाले विश्वास अर्थात उस विश्वास का जिसका उसके कर्म के कारण प्रतिफल मिला, का चित्रण इब्रानियों 11 अध्याय में मिलता है। निज़्नलिखित लोग परमेश्वर को इसलिए पसन्द थे ज़्योंकि उनके विश्वास ने उन्हें कर्म करने के लिए प्रेरित किया था

> हाबिल ने अपना बलिदान ज़ेंट किया (आयत 4); हनोक, जो परमेश्वर के साथ चलता था (उत्पज़ि 5:24) ऊपर उठा लिया गया था (आयत 5); नूह ने एक जहाज बनाया (आयत 7); अब्राहम परमेश्वर की बात मानकर निकल पड़ा (आयत 8); साराह गर्भवती हुई (आयत 11); अब्राहम ने इसहाक को भेंट किया (आयत 17); यूसुफ ने अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी (आयत 22); मूसा के माता-पिता ने उसे छुपाए रखा (आयत 23); मूसा ने बड़े होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार कर दिया (आयत 24); मूसा मिसर से भाग गया (आयत 27); मूसा ने फसह मनाया (आयत 28); इस्राएल के लोग समुद्र से होकर आगे बढ़े (आयत 32); इस्राएलियों ने यरीहो की दीवारों के चज़्कर लगाए (आयत 30); राहाब ने जासूसों को अपने घर में छुपाया (आयत 31)।

आज्ञाकारी विश्वास के उपरोज़्त सभी उदाहरण इस बात का प्रमाण हैं कि परमेश्वर केवल उसी विश्वास को स्वीकार करता है जिससे हम उसके वचन पर भरोसा रखकर उसकी आज्ञा मानते हैं। हम विश्वास से आज्ञा मानते हैं ज़्योंकि हमारा विश्वास है कि परमेश्वर हमें अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसका प्रतिफल देगा। जो आशिषें परमेश्वर हमें देता है उन्हें

उसके कार्य द्वारा पूरा किया जाता है अर्थात उन्हें उन कार्यों से प्राप्त नहीं किया जाता जो वह हमें अपने विश्वास को व्यज़्त करने के लिए कहता है।

जो लोग यह सिखाते हैं कि बपतिस्मे की कोई आवश्यकता नहीं है उनकी शिक्षा का आधार पौलुस के लेखों में ''केवल विश्वास'' है। परन्तु इसमें पौलुस की शिक्षा को समझने की कमी दिखाई देती है और इससे पौलुस ही यीशु और नये नियम के शज़्दों का विरोध करता महसूस होता है। यीशु ने कहा कि राज्य में प्रवेश करने वाले केवल वही लोग हैं जो पिता की ''इच्छा पर'' चलते हैं (मज़ी 7:21)। उसने कहा कि वे लोग धन्य हैं ज़्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन को सुनकर इसे ''माना'' है (लूका 11:28)। इसके अलावा उसने लोगों को ''उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक ठहरता है'' परिश्रम करने के लिए कहा था (यूहन्ना 6:27)। याकूब ने सिखाया कि ''मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है'' (याकूब 2:24)। पतरस ने समझाया कि हमारे हृदयों को ''सत्य के मानने'' से पवित्र किया गया है (1 पतरस 1:22)। यूहन्ना ने लिखा कि यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं तो ''हमें मालूम होता है कि हम उसमें हैं'' और ''हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है'' (1 यूहन्ना 2:3-5; 3:24)।

''केवल विश्वास'' की शिक्षा पौलुस को भी उलझन में डाल देती है, ज़्योंकि उसने लिखा है कि अनन्त जीवन उन्हें दिया गया है ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर और अमरता की खोज में हैं'' (रोमियों 2:7)। उसने आगे कहा, ''कि तुम ... मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए'' (रोमियों 6:17, 18); ''डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ'' (फिलिप्पियों 2:12ख)। इब्रानियों 5:9 में हम पढ़ते हैं कि यीशु ''अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।''

बपतिस्मा वह कार्य नहीं है जो अपने आप में पापों को मिटा देता है; बल्कि यह यीशु के कार्य में विश्वास पर आधारित है। इस तथ्य का अर्थ यह है कि परमेश्वर के काम में विश्वास करने के लिए प्रेरित करने वाले कार्य के कारण विश्वास को मानने का ही प्रतिफल मिलता है।